UNIVERSITY OF CAMBRIDGE INTERNATIONAL EXAMINATIONS
International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME	

CENTRE NUMBER						CANDIDATE NUMBER					

1021848274

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **May/June 2011**

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, highlighters, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

At the end of the examination, fasten all your work securely together.
The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

For Examiner's Use	
Section 1	
Section 2	
Total	

This document consists of **13** printed pages and **3** blank pages.

© UCLES 2011
UNIVERSITY *of* CAMBRIDGE
International Examinations

खंड -1

अभ्यास 1 प्रश्न 1–6

"राजस्थान के मंदिरों में होली उत्सव" पर आलेख पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

कई दिनों तक चलने वाले इस उत्सव में भक्त भगवान के साथ होली खेलते हैं तो कलाकार संगीतमय प्रस्तुतियों के साथ उनकी आराधना करते हैं। इसमें मुस्लिम कलाकार भी बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। इन दिनों में जयपुर के गोविंद देव के मंदिर में नज़ारा देखने लायक होता है। कहीं मंदिर में रंग गुलाल-अबीर की रौनक होती है तो कहीं भक्त भगवान के साथ फूलों की होली खेलते है। इस दौरान मंदिरों की छटा इंद्रधनुषी हो जाती है। रोज़ अलग-अलग कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन कर अपने प्रिय कान्हा के साथ होली खेलने का चित्रण करते हैं।

मंदिर से जुड़े गौरव धामानि कहते हैं, "यह ढाई सौ साल से भी ज्यादा पुरानी परंपरा है और रियासत काल से चली आ रही है। दरसल ठाकुर जी (भगवान) को रिझाने के लिए होली उत्सव शुरू किया गया था, जो अब भी जारी है।" वह बताते हैं, "तीन दिन तक चलने वाले इस उत्सव में राज्य भर के क़रीब दो सौ कलाकार अपनी कला का भक्ति भाव से प्रदर्शन करते हैं।"

आयोजन के पहले दिन मंदिर में झांकी सजती है और सभी कलाकार अपनी-अपनी कला से वंदना करते हैं। जैसे कि कत्थक नृत्यांगना गीतांजलि ने नृत्य पेश किया। उन्होंने कहा, "यह भगवान की बंदगी है। यह समर्पण है, हमने जो कुछ भी सीखा है, उसे ईश्वर के चरणों में समर्पित कर दिया।" कत्थक गुरू डाक्टर शशि सांखला कहती हैं, "कृष्ण कथानक और होली का गहरा रिश्ता है। श्रीकृष्ण को कत्थक का आराध्य देव माना जाता है। होली आती है तो कृष्ण को याद किया जाता है क्योंकि उनका स्वभाव चंचल है।"

त्योहार प्रेम और सद्भाव का संदेश लेकर आते हैं। भक्ति से भरे माहौल में जब नगाड़े की आवाज़ सुनाई देती है तो यह शफ़ी मोहम्मद का हुनर है। वे हज करके लौटे हैं और सच्चे मुसलमान हैं लेकिन उनके धर्म ने उन्हें भक्ती की इस रसधारा में शामिल होने से नहीं रोका। वह कहते हैं, "इबादत में क्यों फ़र्क किया जाए। हम पीढ़ियों से इससे जुड़े हैं। गोविंद के दरबार में आते हैं और अपने साज़ से इबादत करने वालों का साथ देते हैं।" शफ़ी कहते हैं, "रजवाड़ों के समय से हम मंदिरों में जाते हैं, शहनाई बजाते हैं, नगाड़ा बजाते हैं। भजन भी गाते हैं।"

जोधपुर के राजा मान सिंह के दरबार में रमज़ान ख़ान गायक थे। उनकी होली बड़ी मशहूर थी। रमज़ान होली के गीत गाते थे। तब धर्म के आधार पर कोई दीवार नहीं होती थी। गोविंद देव मंदिर का होली उत्सव नेक़ इबादत का समागम था। न कोई धर्म-संप्रदाय की श्रेष्ठता का सवाल उठा, न किसी ने पूछा कि ख़ुदा बड़ा है या भगवान।

For Examiner's Use

1 अबीर गुलाल और फूलों की वर्षा किस रूप में नज़र आती है?

.... [1]

2 कलाकारों के प्रदर्शन में होली खेलकर किसे आकर्षित किया जाता है?

.... [1]

3 कलाकारों के प्रदर्शन के पीछे प्रमुख उद्देश्य क्या होता है?

.... [1]

4 होली के समय भगवान कृष्ण की उपासना क्यों की जाती है?

.... [1]

5 शफ़ी मोहम्मद हिंदू मंदिर में संगीत बजाने को किस रूप में देखते हैं?

.... [1]

6 गोविंद देव मंदिर का होली उत्सव किस भावना का प्रतीक है?

.... [1]

[अंक: 6]

© UCLES 2011

[कृपया पृष्ठ उलटें

अभ्यास 2 प्रश्न 7

आरती पटेल की उम्र 15 वर्ष है। वह नई दिल्ली में बाबर रोड पर स्थित 12 नंबर के मकान में अपने परिवार के साथ रहती है। उसका टेलिफोन न. 22234579 है। आरती का ईमेल पता है, arati49@hotmail.com वह शिक्षा में अपने स्कूल की श्रेष्ठ छात्रा होने के साथ-साथ तीरंदाज़ी में भी माहिर है। और इंटरस्कूल प्रतियोगिता में पहले स्थान पर आती है। इस वर्ष दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता का विज्ञापन उसने देखा और उसमें भाग लेना चाहती है। उसका मानना है कि इन खेलों के माध्यम से वह राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों की अभ्यास शैली और प्रतियोगियों के प्रदर्शन द्वारा बहुमूल्य अनुभव प्राप्त कर सकती है। यही कारण है कि वह इस अवसर पर ज़्यादा से ज़्यादा खिलाड़ियों से मिलना चाहती है।

आरती पटेल ने यह विज्ञापन देखा और वह इस राष्ट्रीय खेलों में खेल अधिकारियों के सहकर्मी के पद के लिए आवेदन करना चाहती है।

राष्ट्रीय खेल चयन समिति,
खेल गांव, पंचशील, नई दिल्ली 110001
दूरभाष 27983445, 27593484

आवेदन पत्र आमंत्रित हैं तीरंदाज़ी में विशेष योग्यता प्राप्त छात्र-छात्राओं से

तीरंदाज़ी के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त 14-16 वर्ष की आयु के छात्र-छात्राओं को राष्ट्रीय स्तर पर चयनित करने हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किए जा रहे हैं।
राष्ट्रीय स्तर पर चयनित बच्चों को 20,000 रुपये की धनराशि तथा एक प्रमाण पत्र दिया जाएगा।
इस संबंध में दिल्ली सरकार के सार्वजानिक विज्ञापन को सफल बनाने के लिए स्कूल प्रधानाचार्य भी खिलाड़ियों के नाम की अनुशंसा कर सकते हैं।
यह आवेदन पत्र राष्ट्रीय खेल चयन समिति को ईमेल द्वारा या फिर सीधे जगत जाल पर भी आवेदन किया जा सकता है। यह अनुशंसा 31 जुलाई, 2011 तक भेजी जा सकती है।

आप अपने को आरती पटेल मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

राष्ट्रीय खेल चयन समिति,

खेल गांव, पंचशील, नई दिल्ली 110001

दूरभाष 27983445, 27593484

आवेदक का नाम....आरती पटेल ....

आयु - ....

ईमेल - ....

स्थायी पता ....

....

दूरभाष ....

अपने खेल की जानकारी दीजिए

....

आप इस खेल के लिए क्यों आवेदन करना चाहते हैं

....

....

....

[अंक:7]

अभ्यास 3 प्रश्न 8–10

निम्नलिखित आलेख पढ़िए और अगले पृष्ठ पर दिए गए कार्य को निर्देशानुसार पूरा कीजिए।

टेलीविज़न समाचार – सूचना का एक सतही माध्यम।

समाचार का यह माध्यम अब स्थाई रूप से हमारी ज़िंदगी में आ चुका है। अब इसे अपने जीवन से निकालना और हटाना तो दूर की बात, इसे कुछ घंटों तक बंद रखना भी असंभव होता जा रहा है। टीवी पर चलती-फिरती तस्वीरों का नशा ऐसा चढ़ता है कि इसके बंद होते ही कुछ छूट जाने का ख़तरा होता है। दुनिया भर की अच्छी-बुरी ख़बरें बस एक बटन दबाते ही हमारी आँखों के सामने नाचने लगती हैं। लेकिन क्या इससे हमारी ज़िंदगी में सुकून आया है? मेरा जवाब होगा – नहीं आया है। टीवी देखते हुए हम जोश और दबाव महसूस करते हैं। इस जोश और दबाव की परोक्ष मानसिक प्रतिक्रिया को हम समझ नहीं पाते। धीरे-धीरे हम टीवी से चिपक जाते हैं।

समाचार और ज्ञान देने में टीवी की भूमिका अख़बार और पुस्तकों से कम है। यद्यपि पुस्तकों और अख़बारों की अपेक्षा टेलीविज़न की तस्वीर से एक भावनात्मक जुड़ाव होता है फिर भी यह एक ऐसा माध्यम है, जिसे पलटकर या दोबारा नहीं देखा जा सकता। इसमें आँखों के सामने से जो एक बार निकल गया, वह कुछ बिंबों में थोड़ी देर के लिए दिमाग़ में टिकता हैं। जैसे ही दूसरे दृश्य आँखों के सामने से गुज़रते हैं, वैसे ही पुराने बिंब धूमिल हो जाते हैं। यही कारण है कि टीवी पर आई बड़ी से बड़ी ख़बर भी वैसी सूचना नहीं दे पाती, जो अख़बारों के ज़रिए मिलती है। मुझे लगता है कि टीवी पर तात्कालिकता अधिक महत्वपूर्ण होती है। सबसे पहले और तुरंत आने की होड़ में ख़बरों की सतह पर ही टीवी के कैमरे गुजर पाते हैं और टीवी रिपोर्टर समाचार को सतह पर ही दिखाते और बताते हैं। न तो ख़बरों की गहराई में वे हमें ले जाते हैं और न उसके आगे-पीछे के कारण और प्रभाव के बारे में बताते हैं। लाइव कार्यक्रम दर्शकों की उत्तेजना बनाए रखते हैं। छोटी ख़बरों तक में 'लाइव' या आँखों देखा हाल की सनसनी तो रहती है, पर अगले दिन तक उसका असर ग़ायब हो जाता है। शायद कह सकते हैं कि टीवी ने कोई ऐसी उल्लेखनीय प्रस्तुति नहीं की है, जिससे हमारा सामाजिक या राजनीतिक जीवन प्रभावित हुआ हो।

For Examiner's Use

आपके स्कूल में एक वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। आप भी इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेना चाहते हैं। दूरदर्शन – सूचना का एक सतही माध्यम नामक लेख में से नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक के अंतर्गत टिप्पणियां लिखें जिसपर आपका भाषण आधारित हो।

8 टेलीविज़न से दूर रहना कठिन

- .... [1]
- .... [1]

9 टेलीविज़न से परहेज़ न करने के कारण

- .... [1]
- .... [1]

10 पुस्तकों, अख़बारों की अपेक्षा टेलीविज़न की कमज़ोरियाँ

- .... [1]
- .... [1]
- .... [1]

[अंक: 7]

अभ्यास 4 प्रश्न – 11

निम्नलिखित आलेख के आधार पर एक लेख लिखिए और बताइए कि क्या वर्षा के जल संरक्षण से पानी की कमी को हल करने में मदद मिलेगी? आलेख की मुख्य बातों को अपने शब्दों में लिखिए।
आपका आलेख 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
संगत बिन्दुओं के समावेश पर 6 अंक और भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

जल संरक्षण

पानी की समस्या आज भारत में ही नहीं वरन विश्व के कई हिस्सों में विकराल रूप ले चुकी है। इस समस्या से जूझने के कई प्रस्ताव भी सामने आए हैं। उनमें से एक है नदियों को जोड़ना। लेकिन यह काम बहुत मंहगा और वृहत् स्तर का है, साथ ही पर्यावरण की दृष्टि से खतरनाक भी साबित हो सकता है। इसके विरूद्ध काफी प्रतिक्रियाएं भी हुई हैं। बारिश के पानी को बर्बाद होने से बचाना और इसका संरक्षण करना शायद जमीनी नदियों को जोड़ने की अपेक्षा ज़्यादा आसान होगा।

यदि पानी का संरक्षण एक दिन शहरी नागरिकों के लिए अहम मुद्दा बनता है तो निश्चित ही इसमें तमिलनाडु का नाम सबसे आगे होगा। लम्बे समय से तमिलनाडु में ठेकेदारों और भवन निर्माताओं के लिए नये मकानों की छत पर वर्षा के जल संरक्षण के लिए इंतजाम करना आवश्यक है। पर पिछले कुछ सालों से गंभीर सूखे से जूझने के बाद तमिलनाडु सरकार इस मामले में और भी प्रयत्नशील हो गई है। उसने एक आदेश जारी करके तीन महीने के अन्दर सारे शहरी मकानों और भवनों की छतों पर वर्षा जल संरक्षण संयत्रों का लगाना अनिवार्य कर दिया है। सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि सभी संस्थानों के लिए यह अनिवार्य है। आज लगभग हर आदमी इस काम में विश्वास करता है कि पानी का संरक्षण आवश्यक है। चेन्नई में एक नया जोश है।

रामकृष्णन ने टूटूक्कुडी ज़िले के विलाथीकुलम नामक गांव के एक तालाब को पुनर्जीवित करने का निश्चय किया। इस परियोजना की रूपरेखा बनाने में उनको "धान संस्था" के रूप में एक उत्तम सहयोगी भी मिल गया है। इस संस्था ने सबसे पहले जिस गांव के तालाब का जीर्णोद्धार किया था उसी के नाम पर उनका काम "एडआर माडल" के नाम से मशहूर हुआ। इस में स्थानीय लोग, ग्राम पंचायत तथा सरकार तथा धान संस्थान एवम अनुदान देने वाली संस्थाओं के साथ मिलकर काम करते हैं। इन पुनर्जीवित तालाबों ने लोगों में नया उत्साह, उमंग और सुरक्षा की भावना को भर दिया है।

पंप और पाइप का इस्तेमाल अभी भी होता है लेकिन पानी का स्रोत केवल हैंडपंप ही नहीं है बल्कि तालाब भी है। पर शायद लोगों के काम का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है पम्मल में स्थित साढ़े पांच एकड़ में फैले सूर्य अम्मन मंदिर की टंकी का पुनरूद्धार। इसका श्रेय मुख्यतः मंगलम सुब्रमण्यम को जाता है जिन्होंने स्थानीय लोगों तथा व्यापारियों को इस काम के लिए जाग्रत किया।

For Examiner's Use

[अंक: 10]

खंड 2

अभ्यास 5 प्रश्न 12–18

हिंदी साहित्य साधक बालकृष्ण राव पर लिखे इस आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

हिंदी और तेलुगू के यशस्वी साहित्यकार, बाल पत्रिका चंदामामा के पूर्व सम्पादक, प्रसिद्ध बालसाहित्य सर्जक, अनन्य हिन्दी साहित्य साधक डॉ. बालकृष्ण राव का जन्म आन्ध्र प्रदेश में हुआ। उनकी मातृभाषा तेलुगू है। उन्होंने 14 उपन्यास, लगभग दर्जनभर नाटक, कहानी संस्मरण, संस्कृति एवं साहित्य से संबंधित पुस्तकें लिखीं।

बात सन् 1946 की है जब मद्रास में हिन्दी प्रचार सभा की रजत जयंती पर महात्मा गांधी जी से बालशौरि की पहली भेंट हुई। गांधी जी के राष्ट्रीय आन्दोलन का 14 सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रम के साथ साथ हिन्दी सीखना भी सम्मिलित था। गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने हिन्दी सीखना शुरू किया। आगे चलकर हिंदी की उच्च शिक्षा परीक्षाएं उत्तीर्ण की। हिन्दी पढ़ने के लिए काशी तथा प्रयाग भी गए, यहां पर निराला, महादेवी वर्मा, बच्चन जी जैसे बड़े साहित्यकारों से परिचय हुआ और उन्हें लिखने-पढ़ने की प्रेरणा मिली।

तेलुगू और हिन्दी दोन्नों में उन्होंने समानान्तर रूप से लेखन कार्य किया। बाल मनोविज्ञान से संबंधित विषयों पर पुस्तकें लिखीं। आपकी लगभग सभी श्रेष्ठ तेलुगू रचनाओं का हिन्दी में भी अनुवाद हुआ है। गांधी जी का इनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। अपने साहित्य के माध्यम से इन्हीं गांधीवादी मूल्यों को रेखांकित करने की कोशिश की है।

बाल साहित्य लेखन को आपने अधिक मान-सम्मान और पहचान दी है। इसका सबसे बड़ा कारण उनका चंदामामा पत्रिका से जुड़ना था। उन्होंने 1966 में इस पत्रिका का कार्यभार बतौर सम्पादक संभाला था, उस समय चन्दामामा की प्रसार संख्या 75,000 से बढ़कर 167,000 तक पहुंच गई थी।

वह कहते हैं कि अहिन्दी शब्द से मुझे घृणा है। मैं हिन्दी का लेखक हूं, यह कहने में मुझे गर्व महसूस होता है। जब मैं हिन्दी में लिखता हूं तो हिन्दी का लेखक होता हूं। इसका मेरी मातृभाषा से कुछ लेना-देना नहीं है। बार-बार हमें अहिन्दी या हिन्दीतर कहकर अपमानित करने की चेष्टा की जाती है। मेरे लिए यह असहनीय है। मेरे कृतित्व के आधार पर आप मुझे छोटा या बड़ा लेखक निर्धारित कीजिये। यदि मेरी रचना में त्रुटि है तो सम्यक अवलोकन करने के पश्चात् अपने विचार दें। यदि हिन्दी भाषी लोग तेलुगू में लिखते हैं, तो उनको मैं अतेलुगू रचनाकार नहीं कहूंगा। मैं गर्व से कहूंगा कि मेरी भाषा के लेखक हैं। तेलुगू में अंग्रेजी, तमिल और अनेक भारतीय भाषाओं के विद्वानों ने लिखा है, हम बड़े आदर के साथ अपने साहित्य में उनका उल्लेख करते हैं।

For Examiner's Use

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही और ग़लत का निशान लगाकर दीजिए। यदि वाक्य गलत है तो पाठांश के आधार पर वह वाक्य भी लिखिए जिससे वाक्य सही साबित होता है।

	सही	ग़लत
उदाहरण – डॉ. बालकृष्ण राव का जन्म कर्नाटक में हुआ।	☐	✓

औचित्य – डॉ. बालकृष्ण राव का जन्म आन्ध्र प्रदेश में हुआ।
....

12 डा. बालकृष्ण राव महात्मा गाँधी से मिलने के बाद हिंदी सीखने का निश्चय किया। ☐ ☐

....

13 डा. बालकृष्ण राव मद्रास में निराला बच्चन जैसे बड़े साहित्यकारों से से मिलें। ☐ ☐

....

14 उनकी श्रेष्ठ तेलुगू रचनाओं का अनुवाद लगभग सभी भारतीय भाषाओं में हुआ। ☐ ☐

....

15 डा. रेड्डी ने गांधीवादी विचारों की आलोचना को अपने साहित्य द्वारा पेश किया। ☐ ☐

....

16 किस कारण बतौर लेखक उनकी प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी हुई?

....[1]

17 वह किस बात पर अवमानित महसूस करते हैं?

....[1]

18 डा. रेड्डी के अनुसार योग्य लेखक का आधार क्या होना चाहिए?

....[1]

[अंक:10]

अभ्यास- 6

क्या सचमुच एक से अधिक भाषा जानना ज़रूरी है?

आपके स्कूल में एक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है जिसका विषय है 'क्या एक से ज़्यादा भाषाएं जानना आवश्यक है'? आप इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेना चाहते हैं। अपने विचारों को प्रस्तुत करने के उद्देश्य से उत्तर लिखिए।

आपका भाषण 150 या 200 शब्दों से ज़्यादा नहीं होना चाहिए।

लिखित भाषण पर अंक विषय संबंधी अंर्तवस्तु, शैली और सही भाषा लिखने पर दिए जाएंगे।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

[**अंक:** 20]

© UCLES 2011

BLANK PAGE

BLANK PAGE

© UCLES 2011

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

University of Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.